कारक रचना

संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के संज्ञा अन्य शब्दों विशेषकर क्रिया से अपना संबंध बताता है, उसे कारक कहते हैं।
जैसे, राम ने रावण को बाण से मारा।

इस वाक्य राम, रावण बाण ये तीन संज्ञाएँ है। लेकिन राम और रावण आगे कर्ता कारक और कर्मकारक प्रत्यय लगता है । तिनों शब्दों में संज्ञा का रूप परिवर्तित होता है। और तिनों संज्ञाओं का संबंध मारा इस क्रिया से है। राम मारने वाला है, रावण मरने वाला है और बाण मारने का साधन है इसलिए ने, को, से ये तीनों विभक्ति प्रत्यय संज्ञा का विशेष संबंध बतलाते हैं। इन्हे कारक कहाँ जाता है।

कारक पहचान :--

1] कारक को प्रकट करने के लिए कारक के लिए प्रयोग किए जाने वाले चिह्नों को विभक्ति कहते है।
" राम ने रावण को मारा।" इसमें ने, को, ये विभक्तिया है।
2] प्रत्येक कारक का एक ही विभक्ति चिह्न होता है।
3] कभी कभी विभक्ति लुप्त हो जाती है।

कारक के भेद

कारक के 8 भेद माने गए है। कारक, उनकी विभक्तियाँ तथा कारक बोधक प्रश्न निम्न तालिका में दिए गए है--

अ. क्र.	कारक	प्रत्यय	बोधक प्रश्न
1	कर्ताकारक	ने	किसने
2	कर्मका	को	किसको
3	करणकारक	से	किससे
4	संप्रदानकारक	को, के लिए	किसके लिए
5	अपादानकारक	से	किससे पृथक होकर
6	संबंधकारक	का की के,रा री रे, ना नी ने	किसका
7	अधिकरण कारक	में, पर	कहाँ पर
8	संबोधनकारक	हे !अरे !	हे

इन आठ भेदों का विस्तार से विवेचन निम्ना नुसार कर सकते है।

कर्ता कारक :-- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के कर्ता का बोध होता है। उसे कर्ता कारक कहते है।
जैसे -- " राम ने रावण को मारा।" यहाँ पर मारने की क्रिया राम करता है। इसलिए वह कर्ता है।
कर्मकारक :-- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के कर्म का बोध होता है उसे कर्मकारक कहते है। उदा.
" राम ने रावण को मारा।" यहाँ पर मारने का प्रभाव रावण पर पड़ता है अत: रावण कर्म है।

By Dr. Sangita Chitrakoti

करण कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन/ करण का बोध होता है उसे करण कारक कहते है। उदा- राम ने रावण को बाण से मारा !' यहाँ पर बाण मारने का साधन है | अतः बाण करण कारक है।
संप्रदान कारक :- संप्रदान का अर्थ है प्रदान करना, देना | जिसे कुछ दिया जाता है उसका बोध करनेवाली संज्ञा संप्रदान कहलाती है। जैसे- राम ने सिता के लिए रावण को मारा | यहाँ मारने का कार्य सिता के लिए किया है। अत: सिता संप्रदान है।

अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु का अलग या पृथक होना पाया जाता है उसे अपादान कारक कहते है। उद. "राम ने अयोध्या से लंका जाकर रावण को मारा।"
इस वाक्य में राम का अयोध्या से पृथक या अलग होने का बोध होता है इसलिए अयोध्या अपादान कारक है।

संबंध कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी दूसरी वस्तु के संबंध का ज्ञान होता है उसे संबंध कारक कहते है। जैसे:- राम का धनुष्य, राम की अंगूठी
विशेष-- 1] संज्ञा या माल सर्वनाम का किसी दूसरी वस्तु से संबंध का, की, के द्वारा होता है । जैसे-- राम का, राम की, राम के, उसका, उसकी, उसके, आपका , आपकी आपके।
2] वक्ता पुरुष या श्रोता पुरुषसर्वनामों का संबंध दूसरी वस्तुओं से जोड़ते समय रा, री, रे का प्रयोग होता है। जैसे:- मेरा, मेरी, मेरे,, हमारा, हमारी, हमारे, तुम्हारा तुम्हारी, तुम्हारे।
3] निजबोधक सर्वनामों का दूसरी संज्ञाओं से संबंध ना, नी, ने प्रत्यय से जोड़ा जाता है। जैसे अपना, अपनी, अपने । ना, नी, ने प्रत्यय लगाने से पहले मूल शब्द 'आप' का 'अप' हो जाता है।

अधिकरण कारक: - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है अर्थात क्रिया होने का समय, स्थान के कारण तुलना अथवा मूल्य आदि का पता चलता है उसे अधिकरण कहते है। आधार और अधिकरण एक ही चीज है।जैसे- "राम ने लंका में रावण को मारा। " इस वाक्य में कार्य होने का स्थान' लंका है इसलिए लंका अधिकरण है।
"वह रात में सोता है।" यहाँ समय बतलानेवाला 'रात' शब्द अधिकरण है ।

वह पुस्तक सौ रुपए में ली। यहाँ मूल्य बतलानेवाला शब्द 'सौ' अधिकरण है।

संबोधन कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप का प्रयोग पुकारने या सचेत करने के लिए होता है, इसे संबोधन कहते है। जैसे- हे राम! अरी लड़की!
इन वाक्यों में संज्ञा के पहले जो चिह्न लगा है वह संबोधन है। इन कारको में केवल संबोधन संज्ञा के पहले लगता है |
अजी! तुम यहां क्या कर रहे हो।
भगवान! मेरी रक्षा करो।
संबोधन संबोधन कारक की कोई अलग विभाक्ति नहीं है।